# यह ख़त उस तक पहुंचा देना

**अमेरिकी लड़की जैनेट और भारतीय छात्र विजय का गहरा प्यार रंग लाता, इससे पहले जैनेट के रूढ़िवादी पिता खलनायक की तरह कूद पड़े। क्या था हाइवे से बाहर जानेवाले उस रास्ते का राज, जिस पर लोग ड्राइव करने से कतराते थे।**

कार कछुआ चाल से सड़क पर चल रही है। जहां तक नजर पहुंच रही है, कारें ही कारें दिखायी दे रही हैं। ट्रैफिक रुका है। आगे कोई दुर्घटना हुई है। सड़कें भी क्या करें, कई दिनों से लगातार रुई के फाहों जैसी बर्फ गिर रही है। आज ही बर्फ गिरनी बंद हुई, तो लोग घरों से निकले हैं। नववर्ष का आरंभ हुआ है। हर वर्ष के शुरू का महीना इस देश के बहुत से हिस्सों में बर्फीला होता है। हाइवे 270 सेंट लुईस शहर का हाइवे है, जिस पर यह दृश्य दिखायी दे रहा है। सेंट लुईस अमेरिका के मिड वेस्ट में आता है, जहां इस मौसम में अकसर बर्फीले तूफान आते हैं। मिड वेस्टवासी तो ऐसे तूफानों को झेलने के आदी हो चुके हैं। प्रदेश की सरकार भी ऐसे तूफानों के लिए तैयार रहती है, तूफान आने से पहले सड़कों पर नमक छिड़क देती है और तूफान आने के बाद सड़कें एकदम साफ कर देती है। बावजूद सावधानी के कुछ बर्फ कहीं ना कहीं सड़क के किसी हिस्से से चिपक ही जाती है, जिस पर कारें फिसलने लगती हैं तथा दुर्घटना हो जाती है।

बर्फीले मौसम में ट्रैफिक की समस्या तो अकसर पैदा हो जाती है, हालांकि 4 सड़कें आनेवालों की और 4 सड़कें जानेवालों की हैं। इसके बावजूद कार से कार टकरा रही है। अगर कोई दुर्घटना हो जाए, तो कहीं भी समय पर पहुंचना मुश्किल हो जाता है। ऐसे ट्रैफिक से जूझना उसके और उसके पति की दिनचर्या में शामिल है। मौसम कोई भी हो, उन्हें तो काम पर जाना ही होता है। एअरपोर्ट और उनके काम पर जाने के लिए यही हाइवे पड़ता है।

उसे चिंता मेहमानों की है, जो उसकी कार में बैठे हैं और उन्हें एअरपोर्ट पहुंचाना है। अगर

वे समय पर नहीं पहुंचे, तो उनकी अंतर्राष्ट्रीय फ्लाइट मिस हो जाएगी। मेहमान मुंबई के हैं। वे सेंट लुईस से न्यूयॉर्क के जॉन एफ कैनेडी एअरपोर्ट जाएंगे और वहां से मुंबई की फ्लाइट पकड़ेंगे। एक फ्लाइट छूट गयी, तो अगली फ्लाइट अपने निर्धारित समय पर चली जाएगी, इनके लिए रुकेगी नहीं। सभी तनाव में हैं, पर उत्साहित भी हैं। खराब मौसम के बावजूद फ्लाइट कैंसिल नहीं हुई।

उसके पति हार्दिक कार चला रहे हैं और वह उनके साथ पैसेंजर सीट पर बैठी है। कारों के हुजूम को देख कर उसका दिल घबरा रहा है, वह बेचैन हो रही है। ऐसा पहले उसके साथ कभी नहीं हुआ, हालांकि कई बार वह ट्रैफिक में फंस चुकी है। उसे मेहमानों को समय पर एअरपोर्ट पहुंचाना है। यह जिम्मेदारी उसकी है। वह पीछे मुड़ कर सबको देखती है। सब सोच में डूबे हैं। वह खुद भी सोच रही है, कहीं फ्लाइट ना छूट जाए। वह जानती है अगर फ्लाइट छूट गयी, तो इस मौसम में पता नहीं किस दिन की फ्लाइट मिले और फिर अंतर्राष्ट्रीय यात्रियों को 3 घंटे पहले बुलाया जाता है। परिस्थितियों को नजरअंदाज कर वह उन्हें आश्वासन देती है, ''घबराइए नहीं, अभी ट्रैफिक ठीक हो जाएगा और हम समय पर पहुंच जाएंगे।''

'बेलमिल' जिस फार्मास्यूटिकल कंपनी में वह काम करती है, उसी का एक ऑफिस मुंबई में है। वह बेलमिल कंपनी में प्रोजेक्ट लीडर है और मुंबई ऑफिस की टीम के साथ मिल कर एक प्रोजेक्ट पूरा कर रही है। वही टीम उसकी कार में बैठी है। पिछले 4 दिनों से वे सब उसके साथ उसके घर पर थे और घर में बंद बोर हो गए थे। जबसे वे आए थे, बर्फ की बरसात ने कहर ढाया हुआ था। एक तरह से बर्फ का तूफान आया हुआ था।

वह अपनी टीम की निराशा को समझ रही है। भारत से जब भी कोई विदेश आता है, तो घूमना चाहता है, पर काम के बाद उसकी टीम तो पिछले 4 दिनों से घर में बंद थी, हालांकि उन्हें घुमाने की जिम्मेदारी उसने ली थी। वह भी क्या करती, मौसम दगा दे गया। अब वे सब उकता चुके हैं और जल्द ही घर लौटना चाहते हैं।

''दीपाली, लगता नहीं कि आज हम समय पर एअरपोर्ट पहुंच पाएंगे,'' हार्दिक ने चिंतित होते हुए कहा।

''आप मौसम के समाचार लगाइए, शायद कुछ पता चल जाए,'' दीपाली के चेहरे पर भी चिंता की रेखाएं उभर आयीं।

''जीपीएस नेविगेटर कितने समय में पहुंचने का बता रहा है,'' वह चिंतित सी पूछती है।

''एक घंटे की देरी बता रहा है,'' हार्दिक ने धीरे से कहा।

''क्या !'' कार में बैठे सभी इकट्ठे बोले।

हार्दिक ने समाचार लगा दिए। सब बड़े गौर से समाचार सुनने लगे। समाचार वाचक ने जब हाइवे टू सेवेंटी पर डेढ़ घंटे की देरी की सूचना दी, तो कार में बैठी टीम रुआंसी सी हो गयी। मनीष उस टीम का हेड है, बोला, ''मैडम, अब क्या होगा। हम तो खुश थे कि फ्लाइट कैंसिल नहीं हुई। अब कैसे पहुंचेंगे? अब तो पक्का फ्लाइट छूटेगी।'' मनीष की बात सुन कर हार्दिक और दीपाली दोनों ही उदास हो गए।

तभी अचानक हार्दिक बोला, ''दीपाली, अभी जो एग्जिट आ रहा है, कार उस तरफ मोड़ लो जाए। वहां से निकलनेवाली 3 सड़कों में से बायीं ओर की सड़क इस हाइवे के साथ-साथ चलती है और उस पर ट्रैफिक भी नहीं होता। इससे हम जल्दी एअरपोर्ट पहुंच सकते हैं।''

''आप तो उस सड़क के बारे में जानते हैं फिर इसका जिक्र क्यों कर रहे हैं?''

''दीपाली, हमारे पास कोई चॉइस नहीं है। क्या तुम नहीं चाहतीं कि तुम्हारी टीम समय पर एअरपोर्ट पहुंच जाए?''

''हार्दिक, बचेंगे तो पहुंचेंगे !'' दीपाली ने धीरे से कहा।

''कम ऑन दीपाली, कैसी बातें करती हो। सड़क जंगल से जरूर गुजरती है, पर जिस तरह लोग बातें करते हैं वैसा कुछ भी नहीं। अगर ऐसा होता, तो मेरी जान यह अमेरिका है, सड़क कब की बंद कर दी गयी होती,'' हार्दिक ने भी धीमे से कहा, ताकि मेहमान उनकी बातचीत को सुन ना सकें।

दीपाली खामोश हो गयी। हार्दिक अपनी कार को बाकी कारों से रास्ता बनाता हुआ हाइवे से बाहर जानेवाली सड़क पर ले गया और एग्जिट लेनेवाली अन्य कारों की लाइन में अपनी कार उनके पीछे लगा कर बाहर जाने का इंतजार करने लगा।

''मैडम, जाने से पहले मैं आपको कुछ बताना चाहता हूं,'' मनीष बोला, ''मैं जैनेट गोल्डस्मिथ नाम की लड़की को ढूंढ़ना चाहता था। किसी का खत उस तक पहुंचाना था। मौसम इतना आड़े आता रहा कि मैं आपको यह बात बता भी नहीं पाया। वह खत आपको दे कर जा रहा हूं,'' मनीष बैग से पत्र निकालने लगा।

जैनेट गोल्डस्मिथ का नाम सुनते ही हार्दिक और दीपाली ने एक-दूसरे को देखा। उन दोनों की नजरों में क्या था, मनीष समझ नहीं पाया और वह अपनी ही धुन में बोलता गया... ''मैडम, 2 साल पहले विजय मराठा सेंट लुईस युनिवर्सिटी में पीएचडी करने आया था और जैनेट उसकी दोस्त है। विजय का ही मैसेज उस तक पहुंचाना है।''

''विजय को तुम कैसे जानते हो?''

''मैं और विजय बचपन के दोस्त हैं। हम दोनों मुंबई के धारावी से हैं, जिसे स्लम एरिया कहा जाता है। हम दोनों वहीं जन्मे और पले-बढ़े। बचपन से ही दोनों की दोस्ती हो गयी। कहते हैं ना कुछ बातें कॉमन होती हैं, जो लोगों को एक-दूसरे के करीब ले आती हैं। हम दोनों को पढ़ने का बचपन से ही बहुत शौक था। बस यह पढ़ने-लिखने का शौक ही हम दोनों को करीब ले आया। मैडम, धारावी स्लम जरूर है, पर वहां के भी बहुत से युवक एजुकेटेड हैं।''

''मनीष, मैं जानती हूं,'' दीपाली ने प्यार से कहा।

''विजय को एमएससी के बाद सेंट लुईस युनिवर्सिटी में पीएचडी करने के लिए स्कॉलरशिप मिल गयी और वह यहां आ

तृतीय पुरस्कार

**वनिता कहानी प्रतियोगिता-3**

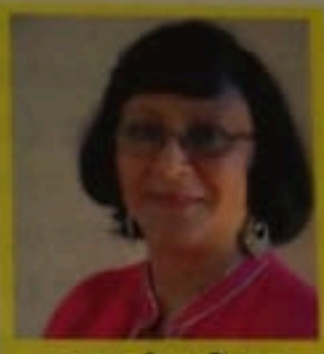

सुधा ओम ढींगरा
*एडिटर, राइटर*
*यूएसए*
*अनेक वर्षों से कहानी लेखन में सक्रिय*

''मैडम, जाने से पहले मैं आपको कुछ बताना चाहता हूं,'' मनीष बोला, ''मैं जैनेट गोल्डस्मिथ नाम की लड़की को ढूंढ़ना चाहता था। किसी का खत उस तक पहुंचाना था।''

रेखांकन : संदीप राशिनकर

गया। मैं एमएससी के बाद बेलमिल फार्मास्यूटिकल कंपनी में जॉब करने लगा,'' इतना कह कर मनीष चुप हो गया।

हार्दिक और दीपाली ने फिर एक-दूसरे की ओर देखा... भेदभरी नजरों से, जिसे कोई समझ नहीं पाया।

दीपाली कार में बैठे-बैठे कहीं और पहुंच गयी...

''दीपाली यह है विजय मराठा, मेरा नया पीएचडी स्टूडेंट। मुंबई से आया है,'' हार्दिक ने दीपाली से विजय को मिलवाया था, ''और विजय, यह है मेरी पत्नी दीपाली। यह भी मुंबई से है।''

लंबे, सांवले, कसे बदनवाले विजय मराठा ने झुक कर उसे नमस्कार किया। उसके घने घुंघराले काले बालों और चमकते सांवले रंग में बहुत आकर्षण था। वह उसे देखती रह गयी थी, मुस्कराहट बिखेर कर उसने अपने देखने को छिपा लिया था।

विजय के घर में प्रवेश करते ही बाहर एकदम काली घटाएं घिर आयीं, जबकि मौसम विभाग ने ऐसी कोई सूचना नहीं दी थी। गहरे स्लेटी, थोड़े से सफेद बादल आकाश में घिरने लगे थे। बादल समूह में इकट्ठे हो कर हल्की-हल्की और फिर तेज गर्जन का शोर मचाने लगे।

दीपाली को अजीब लगा था। प्रकृति का यह रूप वह पहली बार देख रही थी। विशेषकर सेंट लुईस शहर में, जहां प्रकृति सफेद चादरें बिछाती है, पर कभी घटाटोप अंधेरा नहीं करती। प्रकृति हमेशा सेंट लुईस शहर को चकमक सफेद और रोशन रखती है। पर उस दिन प्रकृति किस पर क्रोधित हो गयी थी।

''हार्दिक, नेचर को यह क्या हो गया है। किस पर इतना गुस्सा हो रही है?''

''मैडम, यह क्रोधित नहीं, मुझे देख कर रंग बदल रही है। सोच रही है, इसके रंग में रंग कर देखूं,'' कह कर विजय जोर से खिलखिला कर हंस पड़ा था।

''काफी सकारात्मक सोच के लगते हो,'' दीपाली ने मुस्कराते हुए कहा।

''जी मैडम, अगर पॉजिटिव सोच का ना होता, तो धारावी जैसी जगह से निकल कर इस धरती पर कैसे आता।''

''विजय, मैंने तुझे समझाया था कि यहां सर और मैडम कहने का चलन नहीं। निसंकोच तुम हमारा पहला नाम ले सकते हो या डॉ. शाह या मिसेज शाह कह सकते हो,'' हार्दिक ने मुस्कराते हुए कहा।

तभी उसने उन दोनों का हाथ पकड़ा और मुख्य

*''विजय का कसूर बस इतना है कि उसने एक दकियानूसी, रंगभेदी, पॉलिटीशियन की बेटी से प्यार किया,'' दीपाली रोष से बोली।*

द्वार को खोल कर बाहर बगीचे में ले गया। तब तक बादलों की गरज और बिजली की कड़क के साथ ही रिमझिम बरसात शुरू हो गयी थी और वह खुशी से आसमान की ओर देखता हुआ बोला, ''इस देश में आने पर मेरा स्वागत करने के लिए धन्यवाद!''

उसके साथ साथ वे दोनों भी वर्षा में भीग गए।

''विजय अंदर चलो, तुम अभी नए नए इस देश में आए हो। तुम्हें मालूम नहीं कि इस बरसात में भीगना बीमारी को दावत देना है,'' हार्दिक ने बड़े नरम लहजे में कहा और वे तीनों मुख्य द्वार के सामने आ खड़े हुए।

''क्षमा चाहता हूं मैडम, भूल गया कि यहां के घर लकड़ी के बने होते हैं और अब भीगे बदन अंदर कैसे जाएंगे। आई एम सो सॉरी,'' विजय ने बड़े अंदाज से कान पकड़ते हुए कहा।

दीपाली ने अपने दोनों हाथों से अपने बदन के गीले कपड़ों को ऊपर से नीचे तक निचोड़ा। कपड़े बदन पर और भी चिपक गए। पर टांगों से कुछ पानी निकल गया। तभी उसने दरवाजे पर रखे डोरमैट पर पांव पोंछे और उन दोनों को वहीं रुकने के लिए इशारा किया। भाग कर अंदर गयी और कुछ ही क्षणों बाद वह 2 तौलिए उनके लिए ले लायी। उन दोनों ने कमीजें और पतलूनें उतार कर तौलिए बांध लिए और स्नान करने भीतर चले गए।

दीपाली ने पहले लकड़ी के फर्श पर फैला पानी एक तौलिए से सोखा और फिर पोंछा लगा कर नहाने और कपड़े बदलने चली गयी।

ऐसे गीले-सीले मौसम में पकौड़ों का आनंद आ जाएगा, बस सोच कर ही जल्दी से दीपाली ने कड़ाही चढ़ा दी और पकौड़े तलने लगी। हार्दिक और विजय फैमिली रूम में आ गए। पकौड़ों की खुशबू सूंघते ही विजय गाने लगा, ''हाय हाय ये पकौड़े...'' दीपाली और हार्दिक हंसने लगे। विजय का जीवंत स्वभाव हार्दिक को बहुत पसंद आया।

''अगर मैं आपको भैया-भाभी कहूं, तो आपको एतराज तो नहीं होगा,'' विजय ने बड़े सम्मान से पूछा।

''यूनिवर्सिटी में डॉ. शाह। घर में कुछ भी कह सकते हो,'' हार्दिक ने मुस्कराते हुए कहा।

चाय पीने के बाद वह उठ खड़ा हुआ, ''अच्छा भैया, अब मैं चलता हूं फिर किसी दिन आऊंगा।'' विजय ने मुस्कराते हुए उनसे विदा ली थी।

''रुक जाते, डिनर हमारे साथ ले लेते,'' हार्दिक ने बहुत स्नेह से कहा।

''नहीं भैया, फिर किसी दिन। अच्छा भाभी चलता हूं,'' कह कर विजय दोनों को नमस्ते करके दरवाजे की ओर बढ़ गया। हार्दिक उसे बस स्टॉप तक छोड़ने उसके साथ चला गया।

विजय को छोड़ कर हार्दिक जब घर आया, तो दीपाली ने हंसते हुए कहा, ''देखना, बहुत जल्दी किसी अमेरिकन लड़की ने इसकी जिंदादिली देख कर इससे दोस्ती कर लेनी है। इसे पहले से सचेत कर दीजिएगा।''

हार्दिक गंभीर हो गया, ''ऑलरेडी इसकी किसी से दोस्ती हो चुकी है।''

''क्या?'' दीपाली चौंक गयी, ''कौन है वह लड़की?''

''सेंट लुईस के मेयर रॉबर्ट गोल्डस्मिथ की बेटी जैनेट गोल्डस्मिथ।''

''अभी तो विजय आया है। दोस्ती कब हो गयी? कहां मिले? इसे पता है मेयर नस्लवादी है। वह कभी बर्दाश्त नहीं करेगा कि उसकी बेटी एक भारतीय से दोस्ती रखे,'' दीपाली भावनाओं में बहती बोलती गयी, ''प्लीज विजय को समझाएं, मेयर कंजर्वेटिव, सनकी और रूढ़िवादी पॉलिटीशियन है।'' हार्दिक ने कोई जवाब नहीं दिया। वह गंभीर था।

''क्या विजय ने आपको बताया कि वह जैनेट से कहां मिला, कैसे मिला। मुझे हैरानी हो रही है, उसे आए अभी एक सप्ताह भी नहीं हुआ और एक अमेरिकन लड़की से दोस्ती कर ली। इसका मतलब लड़कियों के मामले में बहुत तेज है। दिखने में तो ऐसा नहीं लगता। मुझे तो बहुत सरल सा लड़का

लगा,'' दीपाली बिना रुके लगातार बोल रही थी।

''दीपाली, शांत हो जाओ। विजय और जैनेट की दोस्ती पहले की है। दरअसल जैनेट ने ही विजय को यहां पीएचडी करने के लिए एनकरेज किया है।''

''मैं कुछ समझी नहीं।''

''जैनेट युनिवर्सिटी के एक्सचेंज प्रोग्राम के तहत मुंबई विश्वविद्यालय में 2 साल के लिए गयी थी। वहीं जैनेट की दोस्ती विजय से हो गयी। विजय को स्कौलरशिप अपनी काबिलीयत पर मिली है, पर अब वह जैनेट के साथ उसके टाउन हाउस में रह रहा है और वे दोनों जल्दी की मेयर को बतानेवाले हैं।''

''क्या बताने वाले हैं कि वे दोनों साथ रहते हैं ! हार्दिक, वे क्या सोचते हैं कि मेयर को पता नहीं,'' दीपाली ने चिढ़ कर कहा था।

''अभी मेयर को यही कहा गया है कि विजय ने भारत में जैनेट की बहुत मदद की थी। इसलिए जैनेट उसकी मदद कर रही है। पर जल्दी ही उसे यह बताना चाहते हैं कि वे दोनों प्यार करते हैं और शादी करना चाहते हैं। अब तुम ही बताओ मैं उसे क्या सचेत करता,'' हार्दिक की आवाज में निराशा उभर आयी थी।

''ओह गॉड ! बेटी तो अपने बाप को जानती है, फिर भी वह यह कदम उठा रही है।''

''दीपाली, तुम फालतू में भावुक हो रही हो...'' हार्दिक ने दीपाली से कहा, ''जैनेट को उसके डैड बहुत ही प्रगतिशील लगते हैं। उसे एक्सचेंज प्रोग्राम में भारत भेजा 2 साल के लिए। वह इसी भ्रम में है कि उसके डैड इस शादी को मान जाएंगे।''

''पौलिटीशियन हैं, हो सकता है अपनी इमेज बचाने के लिए मान जाएं। हम फिजूल में परेशान हो रहे हैं,'' दीपाली ने स्वयं को संयत करते हुए कहा।

''अश्वेतों और दूसरे इमिग्रेंट्स के बारे में उनकी जो राय हैं, उसको देख कर तो नहीं लगता कि मेयर इस शादी के लिए राजी हो जाएंगे। खैर, समय ही इसका उत्तर देगा। तुमने सही कहा, हम क्यों परेशान हो रहे हैं,'' हार्दिक हल्का सा मुस्करा दिया था।

हार्दिक कार को हाइवे से बाहर जानेवाली सड़क से मोड़ कर बायीं ओरवाली सड़क पर ले गया। इस एग्जिट पर 3 सड़कें हैं। सीधे जानेवाली और दायीं ओर जानेवाली सड़क शहर के दक्षिण और पश्चिम की तरफ जाती हैं और बायीं ओर जानेवाली सड़क पूर्व की ओर जाती हुई एअरपोर्ट की मुख्य सड़क से जा कर मिल जाती है।

दो मील ड्राइव करने के बाद हार्दिक ने कार की गति तेज की दी। सड़क पर ट्रैफिक कम हो गया है। सड़क शहर को छोड़ कर जंगल की तरफ जा रही है। जंगल के बीचोंबीच से निकल कर एअरपोर्ट पर समाप्त हो जाती है। काफी घुमावदार भी है। बहुत कम आवाजाही है। पता नहीं चलता कब कोई जानवर सामने आ जाए या कार से टकरा जाए। कम लोग ही इस सड़क से निकलते हैं। रात को यहां से निकलना खतरे से खाली नहीं। भयानक दुर्घटनाएं भी हुई हैं। उन दुर्घटनाओं के साथ भारतीय समुदाय में कई कहानियों ने जन्म लिया हुआ है और अब वे अफसाने बन चुकी हैं।

कार की गति बढ़ने के साथ-साथ हार्दिक के दिल की धड़कन भी तेज हो रही है। बस वह सुरक्षित इस सड़क को पार कर एअरपोर्ट पहुंच जाना चाहता है। उसे यह देख कर तसल्ली हुई कि उससे थोड़ी दूरी पर कुछ और कारें भी जा रही हैं, उसने अपनी भावनाओं को नियंत्रण में करने के लिए दीपाली की ओर देखा। उसे वह किसी और ही दुनिया में खोयी लगी।

उसने अपना ध्यान बंटाने और चुप्पी को तोड़ते हुए मनीष से पूछा, ''क्या मेरे बारे में विजय ने तुम्हें कभी नहीं बताया?'' हार्दिक के प्रश्न पर दीपाली वर्तमान में लौट आयी।

''सर, आप विजय को जानते हैं !'' मनीष ने जिज्ञासा से पूछा।

''मैं विजय का गाइड था, जब वह पीएचडी करने यहां आया। उस समय मैं सेंट लुईस युनिवर्सिटी में प्रोफेसर था,'' हार्दिक ने शांत आवाज में कहा।

''सर, विजय पीएचडी बीच में छोड़ कर क्यों लौट गया। क्या वह यहां ड्रग का धंधा करता था? क्या सच में उसका कोई गैंग था?'' मनीष की आवाज दर्द से भीग गयी।

''ड्रग और विजय ! कैसी बातें करते हो मनीष। तुम तो उसे बचपन से जानते हो, तुम्हीं बताओ, क्या वह ऐसा कर सकता है,'' हार्दिक की आवाज पहले की भांति शांत थी।

''विजय का कसूर बस इतना है कि उसने एक दकियानूसी, रंगभेदी, पौलिटीशियन की बेटी से प्यार किया,'' दीपाली रोष से बोली, ''जैनेट के डैडी ने उसे चेतावनी दी थी, अगर वह विजय का साथ नहीं छोड़ेगी, तो इसके घातक परिणाम होंगे और उनकी जिम्मेदार वह होगी,'' कह कर दीपाली चुप हो गयी।

''फिर क्या हुआ?'' कार में बैठे मनीष, अशोक और पौल के मुंह से एक साथ निकला।

हार्दिक की आंखें सड़क पर जा रही कारों पर टिकी हैं और कान कार के अंदर की बातचीत सुन रहे हैं।

''मनीष, तुम तो जैनेट को भी अच्छी तरह से जानते होंगे। दोनों की दोस्ती मुंबई युनिवर्सिटी में ही हुई थी, क्या यह सही है?'' दीपाली ने पूछा।

''जी मिसेज शाह। विजय जैनेट को बहुत चाहने लगा था, उसी की खातिर इस देश में आया, वरना वह तो विदेश जाना ही नहीं चाहता था,'' मनीष की आवाज में दर्द अभी भी था।

''जैनेट अपने पिता की तरह जिद्दी थी और विजय भी हमारे संकेत नहीं समझा। सच कहूं, वे दोनों एक-दूसरे से बेइंतहा प्यार करते थे। हम भी चाहने लगे थे कि उनका प्यार परवान चढ़े। पर एक गलती उन्होंने कर दी। मेयर रॉबर्ट गोल्डस्मिथ की धमकियों को नजरअंदाज कर दिया। जैनेट इसी गलतफहमी में रही कि उसके पिता बस उन्हें डरा रहे हैं, वह उनकी इकलौती संतान है, उसके डैडी कुछ करेंगे नहीं। वह अपने पिता की मानसिकता को

**''सच कहूं, वे दोनों एक-दूसरे से बेइंतहा प्यार करते थे। हम भी चाहने लगे थे कि उनका प्यार परवान चढ़े। पर एक गलती उन्होंने कर दी।''**

समझ ही नहीं पायी,'' दीपाली की आवाज भी उदास हो गयी।

''जब विजय को वापस भेजा गया, तो जैनेट ने कुछ नहीं किया?'' अब पौल ने पूछा। टीम में भी आगे जानने की जिज्ञासा पैदा हो गयी।

''जैनेट को मेयर ने खबर नहीं होने दी। उसे जब पता चला, देर हो चुकी थी,'' दीपाली ने उसी उदासी में कहा।

''मिसेज शाह, हम समझे नहीं, जैनेट और विजय इकट्ठे रहते थे। तो जैनेट को पता कैसे नहीं चला?'' मनीष ने पूछा।

''इमिग्रेशन ऑफिसर ने पुलिस के साथ मिल कर विजय को लैब से पकड़ा। जो फाइल विजय के खिलाफ युनिवर्सिटी में पेश की गयी, वह थी इमिग्रेशन के कागजों में गलत जानकारी और फैक्ट्स के साथ छेड़छाड़ यानी तथ्यों का अभाव। झूठे प्रमाणपत्र लगाने का जुर्म। इमिग्रेशन के कानूनों का उल्लंघन। धोखे और फ्रौड का बहुत मजबूत केस तैयार किया गया था,'' उदासी ने दीपाली की आवाज भारी कर दी।

''हे भगवान... विजय जैसा ईमानदार और

**बाहर बेहद तेज रफ्तार से हवा चलने लगी... घास पर फैली चादरें चिंदी-चिंदी हो कर हवा में लहराने लगीं**

आदर्शवादी लड़का ऐसा कर ही नहीं सकता,'' मनीष ने बड़े विश्वास के साथ कहा।

''मनीष, विजय इतना सरल, बुद्धिमान और मिलनसार था कि युनिवर्सिटी के इमिग्रेशन ऑफिस के वकील तक उसे सच्चा मानते थे। पर उसके खिलाफ केस इतना मजबूत बनाया गया कि कोई कुछ नहीं कर पाया और सबके सामने वे उसे ले गए। उसका फोन छीन लिया और 3 घंटे के अंदर उसे जहाज में बिठा दिया गया।

''उसका सामान?'' दूसरे सदस्य अशोक ने पूछा।

''वह सब इमिग्रेशनवाले बांध कर लाए थे, तभी तो मुंबई एअरपोर्ट पर उतरते ही वह ड्रग डीलर, ड्रग माफिया का मेंबर और गैंगस्टर पता नहीं क्या-क्या बना दिया। यहां से फोन किया गया था वहां के इमिग्रेशन में। गंदी राजनीति जीत गयी और सच्चा प्यार हार गया। पॉलिटीशियन किसी भी देश के हों, सब एक जैसे हैं,'' दीपाली की आवाज में रुलाई आ गयी, ''मुंबई एअरपोर्ट पर पहुंचते ही विजय के साथ जो हुआ, वह हमें पता चल गया था। युनिवर्सिटी का एक प्रोफेसर उसी जहाज में अपने परिवार के साथ मुंबई गया था और ज्यों ही वह एअरपोर्ट पर उतरा, उसने सब कुछ देखा। यहां आ कर उसने युनिवर्सिटी को इन्फॉर्म कर दिया। हम समझ गए थे... अब वह कभी लौट कर नहीं आ सकता। एक भोला, नादान और अच्छा इंसान घटिया राजनीति, नस्लवाद और रंगभेद की बलि चढ़ गया,'' दीपाली की रुलाई से भरी आवाज में अब हताशा उभर आयी।

''मिसेज शाह, जैनेट को इसका पता कब चला।''

''मनीष, जैनेट के साथ उसके परिवार ने बहुत बड़ा धोखा किया,'' दीपाली गले में आए भारीपन को गले में ही गटक गयी... ''विजय की गिरफ्तारी से एक रात पहले उसकी मां मरियम आईसीयू में दिल के दर्द को ले कर भर्ती हो गयी। विजय को पकड़ कर जहाज में बैठाने तक वह अस्पताल में थी। जैनेट का फोन बंद करके जिस जगह वह बैठी थी, वहीं कुशन के पीछे छुपा दिया गया। जैनेट मां के दुख में विचलित फोन को भूली रही,'' दीपाली सांस लेने के लिए रुकी। उसने गहरी लंबी सांस ली और गले में अटकी रुलाई को कम किया, वर्षों से भीतर दबा लावा बाहर आने को बेताब हो रहा है। हार्दिक और दीपाली ने विजय को ले कर इससे पहले कभी किसी से कोई बात नहीं की थी।

पता नहीं क्यों हार्दिक भीतर से डरा हुआ है। चेहरा सामान्य नहीं लग रहा। भारतीय समुदाय में फैले अफसानों की वजह से, हालांकि वह उन्हें सच नहीं मानता या जंगल से गुजरती इस सड़क पर पहली बार ड्राइव करने से। जंगल के भीतर से घूम-घूम कर जा रही सड़क पर कार को संभालते हुए, वह सचेत हो कर ड्राइव कर रहा है।

दीपाली बताने लगी, ''हार्दिक जैनेट को फोन करते रहे। उसका फोन बंद था। पर अचानक उसे अपने फोन का ध्यान आया, तो उसने उसे ढूंढ़ा और विजय को फोन मिलाया। उसका फोन बंद पा कर उसके हार्दिक को कॉल किया, तो हार्दिक ने उसे सब कुछ बता दिया। दो साल में ही उसने हिंदी अच्छी सीख ली थी। वह अस्पताल में ही चिल्लाने लगी... ''मां की बीमारी के बहाने मुझे यहां रोकना एक षडयंत्र है डॉ. शाह,'' वह रो पड़ी। फोन ऑन था, वह अपने डैडी पर चीख उठी थी, ''यू लायर, आई विल मेक श्योर दैट दिस टाइम यू वोंट विन द इलेक्शन,'' कह कर वह पार्किंग लॉट की ओर भागी। कार में बैठ कर उसने हार्दिक को कहा कि वह एअरपोर्ट जा रही है और फोन बंद कर दिया।

''क्या वह समय पर एअरपोर्ट पहुंच नहीं पायी?''

''मनीष, मैं उस दिन को कभी भूल नहीं पाती। उस दिन भी मौसम बहुत खराब था। हाइवे पर जरूर ट्रैफिक रुका हुआ होगा, जो उसने एअरपोर्ट जाने के लिए यही छोटा रास्ता लिया, पर...'' दीपाली की बात मुंह में ही रह गयी। तभी जोर से तड़ाक-फड़ाक और घर्र-घर्र की आवाज के साथ कार रुक गयी और आगे की कारें भी इसी शोक से रुक गयीं... आगे की कारों से चीख-पुकार शुरू हो गयी...

हार्दिक के चेहरे पर पसीना आ गया और वह उद्विग्न हो कर बोला, ''दीपाली, कारों के आगे देखो कैसा धुआं उठ रहा है... तभी सब कारें रुक गयी हैं।''

सब घबरा गए... घबराहट ने अशांत कर दिया... पॉल घबराहट में बार-बार एक ही बात कहने लगा, ''मैडम, अब क्या होगा? मैडम, अब क्या होगा?

मनीष ने उसे गुस्से से कहा, ''शटअप पॉल... हालात को समझो।'' वह खुद भी बेचैन हो रहा है...

अकस्मात बाहर बेहद तेज रफ्तार से हवा चलने लगी... सड़क के आसपास घास पर फैली चादरें चिंदी-चिंदी हो कर हवा में लहराने लग गयीं। सड़क के इर्दगिर्द बर्फ से लदी, पत्तों विहीन वृक्षों की टहनियां हवा के साथ डोलने लगीं। टहनियों पर से छोटे-बड़े आकार में रुई सी बर्फ ऊपर-नीचे हो कर हवा में उड़ने लगी। हवा में टहनियों का झूलना एक डरावना मंजर पैदा कर रहा है। वातावरण में जंगल से जानवरों की तरह-तरह की आवाजें गूंजनी शुरू हो गयीं। चारों ओर अजीब सा शोर मच गया। इस शोर ने सभी में सिहरन पैदा करके डरा दिया। बस चीखें नहीं निकलीं। आगे की कारों से तो खूब चीख-पुकार हो रही है। कार में सभी के दिल की धड़कनें और सांसें बेकाबू हो रही हैं...

धुएं के अंधड़ ने बर्फ के बवंडर का रूप धर लिया। प्रचंड वेग से हवा का एक बबूला ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर घूमने लगा और चारों ओर उड़ती रुई के टुकड़ों सी बर्फ उसमें सिमटने लगी। गोल-गोल घूमता बवंडर बर्फ का गोला दिखने लगा... वह गोला गति में इतना तेज घूमने लगा कि आसपास की सभी चीजें उड़ कर उसमें समाने लगीं... कारों ने हिलना शुरू कर दिया...

कार में बैठे सभी जनों ने अपनी सीटों को कस कर पकड़ लिया। कार में उन्हें ऑक्सीजन की कमी महसूस होने लगी, पर शरीर हिलडुल नहीं रहे। स्तब्ध और परेशान बैठे आंखें देख रही हैं और मुंह सांस लेने के लिए खुले हुए हैं।

मनीष को सांस लेने में दिक्कत हो रही है। उसने अपने पासवाली खिड़की खोलनी शुरू ही की, तभी दीपाली में पता नहीं कैसे जोश आया और वह जोर से बोली, ''मनीष, खिड़की मत खोलना, हवा इतनी तेज है, कार को उड़ा ले जाएगी।'' मनीष ने खिड़की आधी ही खोली और उसका हाथ रुक गया। पर घनघोर वेग में हवा का एक झोंका तेजी से भीतर आया, जिसने कार को जोर से हिला दिया। लगा कार एक तरफ लुढ़क जाएगी। मनीष खिड़की

के पास बैठा है, हवा उसके बदन को अपनी तरफ खींचने लगी। वह उसकी तरफ झुका भी, साथ बैठे अशोक ने उसकी बाजू पकड़ ली। सीट बेल्ट ने उसे कुर्सी से परे जाने नहीं दिया। पर उसके हाथ में थमा विजय का खत, जो वह जैनेट तक पहुंचाने के लिए दीपाली को देनेवाला था, हवा के वेग के साथ उड़ कर बाहर चला गया। कार में भय और ठंड से सब थरथराने लगे। ठंडी हवा बदन को चीर गयी। इसके बावजूद पॉल ने फुर्ती दिखायी और फटाफट खिड़की बंद कर दी।

यह सब क्षणों में हुआ। भीतर हवा आनी बंद होते ही कार थम गयी। सबकी सांसें काबू में आ गयीं। मनीष का बदन ठंड में भी पसीने से भीग गया। बड़ी मुश्किल से उसकी कंपकंपी बंद हुई। वह जोर-जोर से सांसें ले कर स्वयं को सामान्य करने की कोशिश करने लगा। हार्दिक और दीपाली ने एक-दूसरे को थाम लिया। कार में आए हवा के झोंके ने सबको विचलित कर दिया। गरम कपड़ों की तहों में भी बदन ठंडे हो गए। बदन ऊर्जा रहित हो गए, जैसे हवा का झोंका अपने साथ ही शरीरों की ऊर्जा भी ले गया।

''हाथों को शरीर पर फेर कर ठंड को कम करें, एनर्जी आ जाएगी,'' हार्दिक ने कहा।

पलक झपकते ही हवा उस खत को ले कर बर्फ के गोल-गोल घूमते अब गुब्बारे के आकार में बदल गए गोले में सिमट गयी।

उहूं... उहूं... और कई स्वरों की तीखी ध्वनियां निकालता हुआ वह गोला पल में आकाश की ओर उड़ गया... वातावरण में वे ध्वनियां क्रंदन सी सुनायी दीं। एक तेज रोशनी की लकीर उस गोले से निकली और अंतरिक्ष में खो गयी। चारों और रोशनी फैल कर गायब हो गयी। कार में बैठे मेहमान इन ध्वनियों से सहम गए और उनके दिमाग पता नहीं किन-किन अंधेरी गुफाओं की यात्रा करने लगे। जिसकी जितनी सोच, समझ और विवेक था, उसी स्तर पर इस घटना के स्वरूप के बीज पड़ गए।

बाहर सब कुछ शांत हो गया। जानवरों की आवाजें आनी बंद हो गयीं। हर तरफ देख कर ऐसा लगा जैसे बवंडर आया था, एक बहुत बड़ा टॉरनेडो, जो सब कुछ तहस-नहस कर चला गया। शोरशराबा, चीख-पुकार सब समाप्त ! अगली कारें चल पड़ीं। हार्दिक ने भी अपनी कार आगे बढ़ा दी।

''लगता है जैनेट इस दुनिया में नहीं है,'' मनीष ने बड़ी धीमी आवाज में कहा। ''कैसे जाना?'' सत्य पॉल, जिसे पॉल कहते हैं, ने पूछा।

मनीष ने कोई उत्तर नहीं दिया। सिर झुका कर बैठा रहा। दीपाली ने अपना गला साफ करते हुए कहा, ''मैं बता ही रही थी, जब यह सब हो गया।''

''पर कैसे?'' पॉल ने ही पूछा।

''एअरपोर्ट जाते समय इसी रास्ते पर उसका एक्सीडेंट हो गया था। कहा यह गया कि वह कार तेज चला रही थी और उसकी कार के आगे कोई जानवर भागता हुआ आ गया। स्पीड तेज थी और वह कार को संभाल नहीं पायी, कार पेड़ से टकरा गयी। पर हम जानते हैं, उसके डैड ने उसे मरवा दिया। जिंदा रहती, तो वह उनके लिए खतरा बन जाती।''

''विजय जैनेट की मौत के बारे में जान कर सदमे से टूट जाएगा,'' हार्दिक ने भारी मन ने कहा।

''डॉ. शाह, पुलिस के टॉर्चर से विजय तो पहले ही टूट गया था। अब इस सदमे को सहने से पहले ही वह आजाद हो चुका है,'' मनीष का गला भर गया।

''क्या?'' सबके मुंह से एक साथ निकला।

''पुलिस के टॉर्चर ने उसका मानसिक संतुलन बिगाड़ दिया था। उसका विश्वास डगमगा गया था। मैं उस कंपनी में काम करता हूं, जिसका हेड ऑफिस सेंट लुईस में है। मैंने 2 बेहतरीन वकील उसके मुकदमे की पैरवी के लिए भेजे, पर उसने उनसे बात तक नहीं की। हरेक पर वह शक करने लगा था। मैं जब भी मिलने जाता, वह मिलने से इंकार कर देता। बस अपने छोटे भाई पर विश्वास करता था। उसी के द्वारा हम कुछ मित्र मिल कर अच्छे वकीलों का इंतजाम कर रहे थे।''

''अब समझ में आया उसने हमसे नाता क्यों तोड़ लिया। हालांकि वह जानता था कि मेरे भाई और पिता जी मुंबई के नामी वकील हैं, वे सब उसकी मदद जरूर करते। हमने तो उसके घर पर कई पत्र लिखे। घरवालों से विनती की कि ये पत्र उस तक पहुंचा दें। पर कोई जवाब नहीं आया,'' दीपाली की आवाज बता रही है कि वह बेहद दुखी है।

''विजय ने इस दुनिया को कब छोड़ा?'' दीपाली ने तड़प कर पूछा।

''किसी को पता नहीं, कब, कैसे गया वह इस दुनिया से। कहा यह गया कि उसने निराशा व अवसाद में आत्महत्या की,'' मनीष से आगे बोला नहीं गया।

''परिवार ने ऐसे कैसे लाश ले ली?'' दीपाली की आवाज में दर्द और बढ़ गया।

''मिसेज शाह, परिवार के सदस्य भी क्या करते। पुलिस टॉर्चर तो वे पहले से ही सह रहे थे। चुपचाप लाश ली और दाह संस्कार कर दिया,'' यह बताते हुए मनीष की आवाज टूट गयी।

''तुम्हें यह खत कैसे मिला?''

''यहां आने के पहले एअरपोर्ट के बाहर। विजय का छोटा भाई टीटू दौड़ता-भागता, हांफता हुआ पहुंचा था मुझे यह पत्र देने के लिए। मेरे यहां आने के थोड़ी देर पहले ही उसे किसी कैदी ने यह पत्र भिजवाया था। साथ ही कहा था विजय की अंतिम इच्छा थी यह पत्र जैनेट तक पहुंच जाए। एअरपोर्ट के भीतर जाने तक वह मुझे कहता रहा... *यह खत उस तक पहुंचा देना... यह खत उस तक पहुंचा देना।* मुझे खुशी है खत जैनेट तक पहुंच गया।''

मनीष के चुप होते ही उदास सी खामोशी कार में छा गयी। सड़क एअरपोर्ट की मुख्य सड़क से जा मिली। हार्दिक ने कार एयरपोर्ट के टर्मिनल 2 की ओर मोड़ दी, जहां अमेरिकन एअरलाइन का प्रस्थान स्थल है। कार एक कोने में करते हुए उसने लंबी सांस ली और कहा, ''बावजूद सब अड़चनों के आपको 2 घंटे पहले एअरपोर्ट पहुंचा दिया।''

*''विजय का छोटा भाई टीटू दौड़ता-भागता, हांफता हुआ एअरपोर्ट पहुंचा था मुझे यह पत्र देने के लिए। वह मुझे कहता रहा... यह खत उस तक पहुंचा देना...''*

कार की उदास खामोशी कार के दरवाजे खुलने के साथ ही बाहर हो गयी। एअरपोर्ट तक पहुंचते-पहुंचते सभी के तन और मन बोझिल हो गए थे। समय की टिकटिक जल्दी-जल्दी विदा लेने की दस्तक देने लगी... अपना-अपना सामान ले कर, फीकी सी मुस्कान चेहरों पर बिखेरते हुए दीपाली और हार्दिक से हाथ मिला कर वे तीनों अमेरिकन एअरलाइन के खुलते बंद होते दरवाजों से भीतर चले गए।

हार्दिक और दीपाली कुछ क्षण उन्हें जाते देखते रहे फिर हाइवे से लेने के बजाय कार उसी सड़क पर मोड़ दी, जहां से वे आए थे...

''हार्दिक, यह सड़क अब किसी कहानी को जन्म नहीं देगी,'' कह कर दीपाली सीट पर अधलेटी हो गयी। घुमावदार सड़क, जिसके दोनों तरफ ऊंचे-ऊंचे वृक्षों की टहनियों ने छतरियां बना कर एक मनोरम दृश्य पैदा किया हुआ है, दीपाली उसका आनंद लेते हुए सीट पर पसर गयी। कार इन छतरियों के बीच सड़क पर मध्यम गति से अपने गंतव्य की ओर बढ़ रही है। ◆